प्राक्कथन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने एक ऊर्जावान संगठन के रूप में राष्ट्र की आठ दशक से अधिक समय तक सेवा करते हुए सतत् कृषि के विकास के लिए प्रौद्योगिकियों के विकास का कार्य जारी रखा है। दिनांक 16 जुलाई 2013 को आयोजित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के 85वें स्थापना दिवस के अवसर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने परिषद की उपलब्धियों की सराहना की और वैज्ञानिक समुदाय से *'देश के अंतिम छोर तक पहुंचने तथा किसानों को कृषि की सर्वश्रेष्ठ विधियों से सम्पन्न करने'* और *'कृषि के विकास तथा कृषक समुदाय की सम्पन्नता के लिए प्रौद्योगिकी से संचालित पथ पर कार्य करने' का आह्वान किया।* इन विचारपूर्ण शब्दों को परिषद के अनुसंधान, शिक्षा एवं विस्तार कार्यक्रमों में समाहित किया जा रहा है।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग/भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद गुणवत्तापूर्ण प्रबंध प्रणाली को लागू करके आईएसओ 9001:2008 प्रमाणीकरण की मान्यता प्राप्त करने वाला भारत सरकार का प्रथम विभाग है।

खेत तथा बागवानी फसलों की उत्पादकता, उत्पादन और गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए देश के विविध कृषि जलवायु वाले क्षेत्रों के लिए उच्च उपजशील क्षमता से युक्त तथा विभिन्न प्रतिकूल स्थितियों के लिए बढ़ी हुई सहिष्णुता/प्रतिरोधता से युक्त विभिन्न फसलों की 104 नई किस्में/संकर विकसित किए गए हैं। आज, भारत बासमती चावल का एक प्रमुख निर्यातक है तथा इसने पूसा पंजाब बासमती 1509 जैसी पत्ती ब्लास्ट और भूरे धब्बा रोगों की हल्की प्रतिरोधी व गेहूं की किस्म एच डी 3059 जो सभी तीनों प्रकार के रतुओं, जिनमें तना रतुआ की जाति यूजी99 भी शामिल है, की प्रतिरोधी किस्में विकसित करने और इस प्रकार, किसानों की उत्पादकता को बढ़ाने में सफलता प्राप्त की है। इस वर्ष परिषद ने प्रमुख खाद्य फसलों का 11,835 टन से अधिक प्रजनक बीजों तथा 5,237 टन गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री का उत्पादन किया है।

बदलती उपभोग प्रवृत्ति ने पशुओं से तैयार होने वाले खाद्य पदार्थों की मांग में वृद्धि की है। इस बढ़ती हुई आवश्यकता को पूरा करने के लिए संकर प्रजनित सूअर (एच$_{50}$जी$_{50}$: हैम्पशायर और घुंघरू) तथा दोहरे उद्देश्य के लिए ग्रामीण कुक्कुट नस्ल श्रीनिधि का विकास किया गया है। भ्रूण हस्तांतरण द्वारा विश्व का प्रथम मिथुन बछड़ा उत्पन्न किया गया; परखनली तकनीक से याक के बछड़े 'नोरज्ञाल'; क्लोन द्वारा जनित भैंस माता से कटड़े का जन्म हुआ है तथा उन्नत 'हैंड-गाइडेड क्लोनिंग तकनीक' के माध्यम से भैंस के नर कटड़े का जन्म श्रेष्ठ पशुओं के संरक्षण और प्रजनन के क्षेत्र में प्राप्त की गई प्रमुख उपलब्धियां हैं। सीबास और कोबिया जैसी मछलियों को समुद्री पिंजरों में पालने से तटवर्ती क्षेत्रों की उत्पादकता क्षमताओं के उपयोग को बढ़ाने की दृष्टि से मात्स्यिकी के क्षेत्र में नए आयाम सृजित हुए हैं।

कृषि शिक्षा को लोकप्रिय बनाने तथा इसे बढ़ावा देने के लिए बागवानी, मात्स्यिकी विज्ञान, डेरी प्रौद्योगिकी, गृह विज्ञान, पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन में ई-लर्निंग के लिए एक केन्द्रीयकृत पोर्टल, http://ecourses.iasri.res.in आरंभ किया गया है, जिसमें स्नातक या यूजी स्तर के ई-पाठ्यक्रम नि:शुल्क डाउन लोड के लिए उपलब्ध हैं। भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में भारतीय कृषि के लिए प्रथम सुपरकम्प्यूटिंग हब स्थापित किया गया है, ताकि देश में कृषि अनुसंधानकर्ताओं को जीवविज्ञानी संगणना संसाधनों तक सीधी पहुंच उपलब्ध हो सके। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओपेन एक्सेस पॉलिसी सराहनीय है, भले ही यह सृजित किए गए सभी कृषि ज्ञान या भा.कृ.अनु.प. के जर्नल और प्रकाशनों के भागीदारी के लिए इंस्टीट्यूशनल मेटाडेटा रिपोजिटरी हो, तथापि इससे भारत तथा विदेश में सूचना के प्रचार-प्रसार में बहुत सहायता मिली है। वंचित क्षेत्रों में कृषि शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग/भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने बुंदेलखण्ड क्षेत्र में एक केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए विधेयक प्रस्तुत किया है।

भारत में मौजूद कृषि विज्ञान केन्द्र ऐसे मॉडल रहे हैं जिन्हें पूरे विश्व में सराहा और अपनाया गया है। अपने देश में कृषि विज्ञान केन्द्र ऐसे प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन में शामिल हैं जो उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने की दृष्टि से किसानों के लिए लाभदायक सिद्ध हो रहे हैं। जलवायु की दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील 100 जिलों में जलवायु समुत्थानशील कृषि प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन में कृषि विज्ञान केन्द्रों के हाल में शामिल होने से कृषक समुदायों में इस दिशा में बहुत अच्छी प्रतिक्रिया हुई है। आवश्यकता के आधार पर चार नए कृषि विज्ञान केन्द्र, दो जम्मू व कश्मीर में तथा कर्नाटक व पश्चिम बंगाल में एक-एक इस वर्ष स्थापित किए गए हैं।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ऐसे उन्नत अनुसंधानों में सहयोग के लिए अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों में शामिल रही है जिसका वैश्विक महत्व है और जिससे स्थानीय आवश्यकताओं की भी पूर्ति होती है। भारत में कृषि एवं वानिकी पर आसियन-भारत कार्यदल (एआईडब्ल्यूजीएएफ) की तीसरी बैठक; आसियन देशों के कृषि विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान संस्थाओं के अध्यक्षों के सम्मेलन; स्वर्गीय डॉ. नॉर्मन ई.बोरलॉग के भारत दौरे की 50वीं जयंती मनाने के लिए पैक्ट-50 तथा 5वीं बोरलॉग ग्लोबल रस्ट इनिशिएटिव (बीजीआरआई) 2013 तकनीकी कार्यशाला की मेजबानी की है, ताकि कृषि के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग को और अधिक सबल व सम्पन्न बनाया जा सके।

प्रधानमंत्री की वैज्ञानिक सलाहकार समिति ने पाया है कि 'कृषि में विज्ञान से प्रेरित विकास सकल वृद्धि की एक अनिवार्य शर्त है'। इससे प्रेरणा लेते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद 12वीं योजना में अनेक पहलें कर रहा है, जैसे फार्मर्स फर्स्ट, स्टुडेंट रेडी, कृषि में युवाओं को बने रहने के लिए आकर्षित करना, कृषि प्रौद्योगिकी दूरदर्शी केन्द्र, कंसोर्टिया अनुसंधान प्लेटफार्म तथा नवोन्मेष और एकीकरण के माध्यम से कृषि अनुसंधान व शिक्षा को समृद्ध बनाने के लिए एक्स्ट्रा-म्यूरल फंड। मुझे आशा है कि कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग/भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की वार्षिक रिपोर्ट 2013-14 से विभिन्न स्टेकहोल्डरों को उपयोगी सूचना मिलेगी तथा यह विकास के लिए कृषि अनुसंधान में भावी कार्यक्रमों के नियोजन में सहायक सिद्ध होगी।

(शरद पवार)
अध्यक्ष
भा.कृ.अनु.प. सोसायटी